डेड पोएट्स सोसायटी

कविता के ज़रिए शिक्षा के व्यापक उद्देश्यों को उभारती फ़िल्म

तारेंद्र किशोर

हम अकसर कविता को लेकर कई तरह के कथन सुनते हैं। मसलन, कविता मानवीय संवेदनाओं व मनोभावों की रचनात्मक अभिव्यक्ति है, कविता जीवन का संगीत व सौन्दर्य है, वह अन्त:करण की पुकार है, आदि। कविता में वह सामर्थ्य है जो किसी कठोर प्रवृत्ति के व्यक्ति में भी दया व करुणा का भाव जागृत कर दे। हिन्दी के प्रसिद्ध आलोचक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 1909 में *सरस्वती* पत्रिका में छपे अपने निबन्ध 'कविता क्या है', में लिखा, "कविता मनोवेगों को उत्तेजित करने का एक उत्तम साधन है। यदि क्रोध, करुणा, दया, प्रेम, आदि मनोभाव मनुष्य के अन्त:करण से निकल जाएँ तो वह कुछ नहीं कर सकता। कविता हमारे मनोभावों को विकसित कर हमारे जीवन में एक नया जीव डाल देती है। हम सृष्टि के सौन्दर्य को देखकर मोहित होने लगते हैं। कोई अनुचित या निष्ठुर काम हमारे लिए असह्य होने लगता है। हमें जान पड़ता है कि हमारा जीवन कई गुना अधिक होकर समस्त संसार में व्याप्त हो गया है।"

ऑस्ट्रेलियाई फ़िल्ममेकर पीटर वेयर की इस फ़िल्म *डेड पोएट्स सोसायटी* में अँग्रेज़ी के अध्यापक हैं जॉन किटिंग। वे अपनी कक्षा में एक कविता संकलन से छात्रों को अँग्रेज़ी कविता पढ़ा रहे हैं, जिसकी भूमिका 'अण्डरस्टैंडिंग पोएट्री' शीर्षक से विद्वान आलोचक डॉक्टर जे इवांस प्रिचर्ड ने लिखी है। वे कविता पढ़ाने के दौरान छात्रों को कविता समझाने वाली भूमिका के पन्ने फाड़कर फेंक देने को कहते हैं। इस भूमिका में यह बताया गया है कि कोई कविता कितनी महान है, यह कैसे तय करें। अध्यापक किटिंग अपने छात्रों को हिचकते देख उन्हें प्रोत्साहित करते हुए कहते हैं, "यह भूमिका कोई *बाइबिल* नहीं है, जिसके लिए तुम्हें नरक भोगना पड़ेगा। इसलिए आगे बढ़ो और फाड़ दो इन पन्नों को।" वे कहते हैं, "मुझे अपनी क्लास

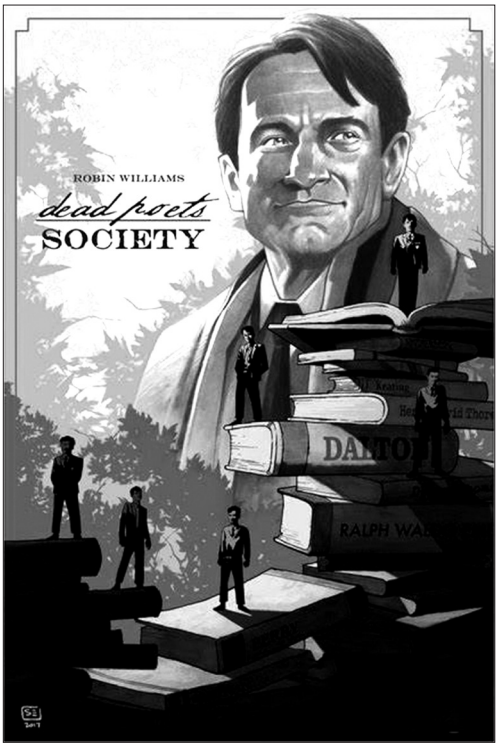

में एक और इवांस प्रिचर्ड नहीं चाहिए। तुम्हें ख़ुद से सोचने की कला सीखनी होगी। तुम्हें भाषा और अल्फ़ाज़ों का लुत्फ़ उठाना होगा। इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि कोई क्या कहता है या फिर क्या समझता है।" वे अपने छात्रों से कहते हैं, "हम कविताएँ इसलिए नहीं पढ़ते और लिखते कि वे सुन्दर होती हैं। हम कविता पढ़ते और लिखते इसलिए हैं क्योंकि हम इंसानी समाज का हिस्सा हैं, और इंसानी समाज प्रबल मनोभावों से संचालित होता है।" आगे वे कहते हैं, "चिकित्सा, क़ानून, व्यापार या फिर इंजीनियरिंग, ये सब महान काम हैं और जीवन क़ायम रखने के लिए बेहद ज़रूरी भी। लेकिन कविता, सौन्दर्य व प्रेम ऐसी चीज़ें हैं जिनके लिए हम जीते हैं।" किटिंग अपने छात्रों को अमरीकी कवि वाल्ट व्हिटमैन की प्रसिद्ध कविता 'ओ मी! ओ लाइफ़!' की कुछ पंक्तियाँ सुनाते हैं और फिर कविता के सार के तौर पर छात्रों से पूछते हैं कि तुम्हारी कविता कहाँ है? तुम अपनी कविता, अपनी आवाज़ ढूँढ़ो। फ़िल्म के इस दृश्य को देखते हुए एक अन्य अमरीकी कवयित्री सिल्विया प्लाथ के मशहूर कथन की याद आती है, "मैं लिखती हूँ इसलिए क्योंकि मेरे भीतर एक आवाज़ है, जो हमेशा नहीं रहेगी।" किटिंग अपने छात्रों से शायद उसी आवाज़ को ढूँढ़ने या महसूसने की बात करते हैं। शिक्षा के व्यापक उद्देश्य भी शायद इसकी ही वकालत करते हैं कि आप अपने सवालों के जवाब ख़ुद से ढूँढ़ पाने और नए सवाल खड़े कर पाने में सक्षम हो पाएँ।

दरअसल फ़िल्म *डेड पोएट्स सोसायटी* में कविता के बहाने शिक्षा को लेकर दो नज़रियों के बीच के द्वन्द्व को दर्शाया गया है। फ़िल्म के दो दृश्यों में इस द्वन्द्व का फ़िल्मांकन बख़ूबी किया गया है। पहला नज़रिया फ़िल्म के शुरुआती दृश्य में ही दिखता है जो वेलटन स्कूल के मूल्य, परम्परा, सम्मान, अनुशासन और श्रेष्ठता, की वकालत करता है। इस दृश्य में स्कूल में दाख़िला लेने वाले नए छात्रों के स्वागत के लिए एक समारोह रखा गया है। इस समारोह में नए छात्र परम्परा, सम्मान, अनुशासन और श्रेष्ठता का ध्वज हाथ में लिए प्रवेश कर रहे हैं। स्कूल के हेडमास्टर नए छात्रों का स्वागत करते हुए स्कूल के उपरोक्त चार आदर्शों का उल्लेख गर्व के भाव से करते हैं। इसके साथ ही वे छात्रों को इनपर ख़रा उतरने का दबाव भी महसूस करा देते हैं। दूसरा नज़रिया फ़िल्म के उस दृश्य में दिखता है। जब नए अध्यापक किटिंग पहली बार छात्रों से रूबरू होते हैं, कक्षा लेने आते हैं। वे सीटी बजाते हुए कक्षा के पहले दरवाज़े से प्रवेश करते हैं और दूसरे से निकल जाते हैं। अब तक कक्षा में सख़्त अनुशासनात्मक अनुभव पाने वाले छात्रों के चेहरे पर विस्मय का भाव है। किटिंग बाहर निकलते हुए झाँककर छात्रों से अपने पीछे-पीछे कक्षा से बाहर निकलने को कहते हैं। छात्रों को लेकर वे स्कूल की उस गैलरी में पहुँचते हैं जहाँ पुराने छात्रों की तस्वीरें लगी हुई हैं। वहाँ पर वे वाल्ट व्हिटमैन की एक कविता 'ओ कैप्टन! माइ कैप्टन!' के बारे में छात्रों से पूछते हैं। यह कविता व्हिटमैन ने अब्राहम

लिंकन के लिए, उनकी मृत्यु पर लिखी थी। किटिंग छात्रों से मज़ाक़िया अन्दाज़ में कहते हैं कि वे चाहें तो थोड़ी हिम्मत दिखाकर उन्हें 'ओ कैप्टन! माइ कैप्टन!' कहकर सम्बोधित कर सकते हैं। आगे वे किताब के एक पन्ने पर लिखी हुई कविता की कुछ पंक्तियाँ अपने एक छात्र पीट्स को पढ़ने को कहते हैं। उस कविता में जो भावनाएँ पिरोई गई हैं, उनपर बात करते हुए वे एक लातीनी लफ़्ज़ 'कार्पे डिएम' का इस्तेमाल करते हैं। इसके मायने वे छात्रों से पूछते हैं। एक छात्र मिक्स, इस शब्द के मायने बताता है– सीज़ द डे। 'सीज़ द डे' अँग्रेज़ी की एक कहावत है। इसका मतलब होता है कल की फ़िक्र में डूबने की बजाय आज को, वर्तमान को अपनी क्षमता के अनुसार भरपूर जीना और वर्तमान के अवसरों का बेहतर इस्तेमाल करना। किटिंग इसके बाद पुराने छात्रों के चेहरों को ग़ौर से देखने को कहते हैं। वे छात्रों को इस बात का एहसास कराने की कोशिश करते हैं कि जीवन की आख़िरी परिणति उसके गुज़र जाने में ही है। इसलिए उसके गुज़रने से पहले उसे भरपूर जीते हुए अपनी ज़िन्दगी को असाधारण बनाओ। यहाँ जब किटिंग 'असाधारण' बोलते हैं तो उनका आशय कामयाबी के प्रचलित मापदण्डों के झण्डे गाड़ना से नहीं होता। वे प्रत्येक जीवन को ख़ुद में असाधारण मानते हैं और उसे अपनी अन्तरात्मा की आवाज़ सुनकर पाने की बात कर रहे होते हैं। वे उस विशिष्टता को पहचानने की बात करते हैं, जो हर किसी में किसी-न-किसी रूप में मौजूद है। वे अपने छात्रों को अपने जवाब ख़ुद से खोजने के लिए प्रेरित करते हैं। इस फ़िल्म की मुख्य थीम यही है। लेकिन इस थीम को केन्द्र में रखते हुए भी फ़िल्म कई दूसरे पहलुओं, विद्रोह की प्रवृत्ति, अनुशासन, भय, स्वतंत्र अभिव्यक्ति, स्वच्छन्दता, ज़िम्मेदारी, आदि, को भी समेटती चलती है।

फ़िल्म की कहानी अमरीका के एक रूढ़िवादी स्कूल वेलटन, के नए सत्र में छात्रों के आगमन और अँग्रेज़ी के नए शिक्षक जॉन किटिंग की नियुक्ति से शुरू होती है। किटिंग एक प्रयोगधर्मी शिक्षक हैं। वे ख़ुद भी वेलटन के छात्र रह चुके हैं और लंदन के एक मशहूर स्कूल में पढ़ाने का उनका अनुभव रहा है। स्कूल में आए नए छात्र वेलटन स्कूल की गौरवशाली परम्परा, उपलब्धियों और अनुशासन के बोझ से दबे हुए हैं। लेकिन वे अकेले में वेलटन को हेलटन कहते हुए स्कूल के चार आधार-स्तम्भ मूल्यों का मज़ाक़ उड़ाते हैं। फ़िल्म दिखाती है कि अत्यधिक सख़्त अनुशासन और नियंत्रण का माहौल इंसान में विद्रोह की भावना जागृत करता है। वेलटन में जहाँ दूसरे शिक्षक सालों से एक ही ढर्रे पर चलते हुए बच्चों को पढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं, वहीं किटिंग अपनी पहली ही कक्षा से पढ़ाने के ग़ैर-परम्परागत तरीक़ों को अपनाते हैं। वे छात्रों के साथ मित्रवत व्यवहार कर उन्हें सहज अभिव्यक्ति के लिए प्रेरित करते हैं। स्कूल के दूसरे शिक्षकों को उनका यह व्यवहार थोड़ा अटपटा भी लगता है। लेकिन उनके छात्रों का डर जाता रहता है और वे ख़ुद को अभिव्यक्त करना शुरू कर देते हैं। यहाँ रवीन्द्रनाथ टैगोर की वह कविता याद आती है– 'जहाँ मन हो

भय से मुक्त और सिर फ़ख़्र से ऊँचा, जहाँ ज्ञान हो आज़ाद!'

टैगोर इस कविता में जिस तरह की परिस्थितियों की कामना करते हैं, कुछ वैसी ही उत्कण्ठा किटिंग के प्रयासों से वेलटन के छात्रों में पनपने लगती है। नए छात्रों का एक समूह स्कूल में 'डेड पोएट्स सोसायटी' नाम से एक पोएट्री क्लब की शुरुआत करता है जिसमें वे ख़ुद को अभिव्यक्त करते हैं। यहाँ वे अपनी रचनात्मकता को बिना किसी दबाव के गढ़ पाते हैं। वहाँ कोई यह नहीं तय करता है कि उनका गढ़ा कितना अनगढ़ है। यहाँ वे अपने मन की हसरतों-ख़्वाहिशों को खुलकर व्यक्त करते हैं और उनके लिए अपनी ज़िन्दगी में जगह बना पाते हैं। वे अपनी ज़िन्दगी से क्या चाहते हैं, किस काम में अपना सौ प्रतिशत दे सकते हैं, यहाँ वे इसका जवाब ढूँढ़ते हैं। लेकिन किटिंग इस दौरान स्वच्छन्दता की वकालत नहीं करते। उनका एक छात्र डाल्टन, स्कूल की पत्रिका में एक विवादास्पद लेख लिखता है और खुलेआम छात्र-शिक्षक सभा में उसकी वकालत करता है। इसके लिए उसे हेडमास्टर की ओर से शारीरिक दण्ड भी दिया जाता है। तब किटिंग, डाल्टन को समझाते हुए कहते हैं, "कब हमें दुस्साहस दिखाना है, कब सावधानी रखनी है, इसकी हमें समझ होनी चाहिए। समझदार व्यक्ति वह है, जिसे इसका पता होता है। अगर तुम्हें स्कूल से निकाल दिया जाता तो तुम बहुत कुछ खो देते और कहीं से भी यह तुम्हारे लिए ठीक नहीं होता।"

फ़िल्म का क्लाइमेक्स तब आता है जब किटिंग का एक छात्र नील, अपने पिता की मर्ज़ी के बिना अभिनय के अपने जुनून का पीछा करते-करते आत्महत्या कर लेता है। उसके पिता नील को डॉक्टर बनाना चाहते हैं जबकि नील ख़ुद को अभिनय के लिए ही बना हुआ पाता है। उसके पिता उसे वेलटन से निकाल किसी दूसरे स्कूल में डालने पर आमादा हो जाते हैं। पिता के इस फ़ैसले से दुखी नील अपनी ज़िन्दगी ख़त्म करने का अनुचित क़दम उठाता है। स्कूल प्रशासन की ओर से नील की मौत के लिए किटिंग को ज़िम्मेदार माना जाता है और किटिंग की भूमिका पर जाँच बैठाई जाती है। किटिंग के छात्रों पर दबाव डालकर, किटिंग की दोषपूर्ण भूमिका सिद्ध करने वाले दस्तावेज़ पर उनके हस्ताक्षर ले लिए जाते हैं।

किटिंग को स्कूल से निकाल दिया जाता है। स्कूल से जाते हुए किटिंग अपना सामान लेने आख़िरी बार कक्षा में जाते हैं। उस समय उनका एक छात्र टॉड, उनसे कहता है कि उन सभी से ज़बरन उनकी गुनाही साबित करने वाले दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर लिए गए हैं। इसपर किटिंग हल्की मुस्कान के साथ कहते हैं कि उन्हें अपने छात्रों पर पूरा भरोसा है। इसके बाद कक्षा के सभी छात्र किटिंग के समर्थन में मेज़ पर खड़े हो जाते हैं जबकि स्कूल के हेडमास्टर उस वक़्त क्लास में मौजूद होते हैं।

वे चीख-चीख कर उन छात्रों को बैठने को कहते हैं, लेकिन छात्र उन्हें अनसुना कर देते हैं। फ़िल्म का यह दृश्य किटिंग के प्रयोगों और अपने छात्रों में विश्वास की जीत को दर्शाता है। सीखने-सिखाने को लेकर किटिंग के प्रयोगों की सबसे बड़ी कामयाबी यहीं दिखती है। उनके छात्र सही और ग़लत के बीच न सिर्फ़ फ़र्क़ करना सीख जाते हैं बल्कि बिना डरे उसके लिए खड़े होने का साहस भी जुटा पाते हैं। शायद यही शिक्षा की तमाम विधाओं, चाहे वह कविता हो या कहानी या निबन्ध, का व्यापक उद्देश्य भी है।

तारेंद्र किशोर का बीबीसी हिन्दी सेवा के साथ 5 सालों तक जुड़ाव रहा है। आप *राष्ट्रीय सहारा, प्रभात खबर, देशबन्धु, दैनिक जागरण* और *जनसत्ता* जैसे दैनिक समाचार-पत्रों में लेख लिखते रहे हैं। आपने वायर, न्यूज़लॉन्ड्री और सबरंग जैसी वेबसाइटों के लिए स्वतंत्र लेखन भी किया है। मार्च 2021 में फ़ेलोशिप कार्यक्रम के तहत अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में कार्य करना शुरू किया, आजकल हरिद्वार ज़िले में रिसोर्स पर्सन के तौर पर काम कर रहे हैं।

सम्पर्क : tarendra.kishore@azimpremjifoundation.org